समाचार एवं विचार सेवा वार्षिक सहयोग राशि 25/–

महाकौशल–संदेश

वर्षः– 17 पृष्ठः– 4 अंक :– 27 संपादक :– डॉ. किशन कछवाहा

RNI No. MPHIN/2001/11140

यह सामग्री 'प्रकाशनार्थ' प्रेषित है। कृपया अपने लोकप्रिय पत्र–पत्रिका में प्रकाशित कर Complimentaryकापी प्रेषित करने की अनुकम्पा करें।

राहुल जी का दिवा स्वप्न

डॉ. किशन कछवाहा

आगामी चुनाव सन् 2019 में सम्भावित है। इसके लिये अभी एक वर्ष छः माह का समय शेष है। इस चुनाव के पूर्व सात विधानसभाओं हिमाचल, गुजरात, कर्नाटक, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान और मिजोरम के चुनाव होंगे। इन विधानसभाओं के चुनावों में काँग्रेस की स्थिति क्या रहेगी इस पर अभी फिलहाल निश्चय पूर्वक कहा नही जा सकता ? सवाल यह भी है कि कांग्रेस अवसर का लाभ उठाने में सक्षम हो पायेगी या नही ? अभी हाल ही में अमेरिका के केलिफोर्निया (वर्कले) यूनिवर्सिटी में अपने भाषण के दौरान राहुल गाँधी ने कहा कि सन् 2019 के आम चुनाव में प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार बनने के लिये पूरी तरह से तैयार हूँ। यह कहकर सार्वजनिक स्वीकृति दे दी है। इसका तात्पर्य यह हुआ कि अब तक जो अटकले लग रही थी। उस ऊहापोह की स्थिति से राहुल जी बाहर आ चुके हैं। कॉग्रेस में भी वंशपरम्परा के अनुसार आगामी 15 अक्टूबर तक पार्टी अध्यक्ष की घोषणा होना है। वैसे भी इसमे दोराय नही है कि श्रीमति सोनियां गाँधी के अध्यक्ष पद पर रहते राहुल जी एक प्रकार से पार्टी प्रमुख की हैसियत रखते ही रहे है। औपचारिक घौषणा मात्र शेष है। काँग्रेस के सांगठनिक ढ़ॉचे पर यदि दृष्टिपात करें तो पता चलता है कि देश के अधिकांश राज्यों में संगठन का ढॉचा चरमरा या हुआ है। इतना ही नही पुराने व नये नेता एक दूसरे को देखकर बॉह खींचे हुये है। यद्यपि कतिपय आनुषॉगिंक संगठनों के प्रमुख पदों पर उन्होने अपने चहेतों को बैठा दिया है। कर्नाटक और मध्यप्रदेश में जो फेरबदल किया है उसके कारण भी असंतोष व्याप्त है। राजस्थान, झारखण्ड़ और छत्तीसगढ़ के भी लगभग यही हाल है। अनेक स्थानों पर वरिष्ठ नेताओं को दर किनार कर दिया गया है। वैसे भी बदलाव किया जाना आसान काम नही होता। पदों पर बैठे लोगों को हटाने से उनसे जुड़े लोगों में नैराश्य एवं असंतोष का भाव पैदा होता है। वैसे भी राहुल जी की छवि जो अभी तक उभरकर आयी है, वह पार्टी में जान फूँकने वाले या जीत दिला पाने वाले नेता की नही बन पायी है। ऐसी इन तमाम परिस्थियों का आकलन करते हुये यह कह पाना कठिन है कि राहुल गाँधी देश के प्रधानमंत्री बन सकते हैं ? विदेशी भूमि पर नफरत, गुस्सा व्यक्त करने से काँग्रेस को देश की जनता का समर्थन नही मिल सकता। यह सहज प्रश्न आम लोगों के जेहन में उठ रहा है कि क्या राहुल गाँधी ने अमेरिका की जमीन पर खड़े होकर भारत का मान बढ़ाया है ? असल में उन्होने विदेशी जमीन का उपयोग भारत की छवि को धूमिल करने और उसकी गरिमा पर कालिख पोतने के लिये किया है। क्या भारत देश वास्तव में बर्वादी की कगार पर खड़ा है ? आज स्थिति ऐसी है कि भारतीय जनता पार्टी का विजयी परचम देश के अठारह राज्यों में फहरा रहा है। मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ और गुजरात की सरकारे अपना तीसरा कार्यकाल पूरा करने जा रही है। इण्डिया टुडे सहित अन्य एजेन्सियों के सर्वे संकेत दे रहे हैं कि भाजपा सन् 2019 के चुनाव में स्पष्ट बहुमत से आंगे रहेगी। इस सबके बाद राहुल जी ने जिस समय पार्टी की जिम्मेदारी लेने का निर्णय लिया है,उसे राजनीतिक जानकार उचित समय नही मानते क्यों कि पिछले पाँच–सात सालों में उनकी कार्यक्षमता और प्रभाव में ऐसा कुछ भी परिलक्षित नही हुआ जो पार्टी के खेवनहार जैसा प्रतीत हो सके । वे सन् 2012 में उत्तरप्रदेश में पूरी ताकत से जूझे लेकिन असफल रहे। सन् 2013 में पार्टी के चिन्तन शिविर में तो लगभग उन्हे पार्टी की बागडोर ही सौप दी गयी थी। सन् 14 का परिणाम ऐतिहासिक पराजय के रूप में सामने आया। अब वे अपनी इस नयी पारी की शुरूआत कैसे करेंगे ? इसका खुलासा तो अभी नही हुआ है पर ये तो कहा ही जा सकता है कि पिछले दौर में वे पूरी तरह असफल रहे हैं। अब प्रश्न यह भी खड़ा रहेगा कि काँग्रेस अपने दम पर चुनाव लड़ेगी या विपक्षी दलों के गठबंधनों के रूप में सामने आयेगी ? और यदि गठबन्धन बना तो क्या विपक्ष उनका नेतृत्व स्वीकार करेगा ? और क्या महागठबन्धन उनको प्रधानमंत्री के पद के प्रत्याशी के रूप में स्वीकार करेगा ? वंशवाद को भारत के लिये स्वाभाविक या उचित सावित करके काँग्रेस के उपाध्यक्ष पद की कुर्सी को जायज ठहरा भी सकते है और आगे चलकर काँग्रेस अध्यक्ष भी बन सकते है लेकिन प्रधानमंत्री बनना क्या इतना आसान है ? लोकतंत्र में जनता तय करती है। सत्ता की छटपटाहट में वे केलिफोर्निया यूनिवर्सिटी में उन तमाम बातों की साफगोई के साथ चर्चा कर बैठे जिनको लेकर आमतौर पर भारत में काँग्रेस पार्टी पर आरोप लगते रहते हैं। जहॉ तक प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी का सवाल है अभी अहमदाबाद में जापानी प्रधानमंत्री के साथ उनका गर्मजोशी से स्वागत किया गया। उससे समझ लेना चाहिये कि उनकी लोकप्रियता में अभी कमी नही आयी है। तीन वर्षो के कार्यकाल के बाद भी भारत के लोग उन्हे काबिल, ईमानदार और अच्छा राजनेता मानते है। जो आलोचक है वे भी मानते है कि उनकी नियत साफ है।

मायावती की माया

वसपा सुप्रीमो मायावती ने आगामी लोकसभा चुनाव सन् 2019 के मद्देनजर अपने कार्यकर्ताओं की हौसला आफजाई करने को मेरठ में रैली कर यह संदेश देना था कि वे एक सियासी मिशन को आगे बढ़ा रही हैं। इस रैली का उद्देश्य प्रधानमंत्री नरेन्द्रमोदी और भाजपा को एक प्रकार से चुनौती देना था। इस सियासी मिशन के पहले ही कदम में कतिपय खतरे के बादल गहराते नजर आने लगे हैं। मायावती के मुख्यमंत्रित्व कार्यकाल में 21 सरकारी मिलों को विवादों से घिरे हुये तरीकों के चलते बहुत ही कम राशि में बेच दिया गया था। यह मामला सुप्रीम कोर्ट तक गया। याचिका में गंभीर आरोप लगाये गये हैं। यदि ये आरोप सही पाये गये तो मायावती को राजनीतिक तौर पर बड़ा झटका झेलना पड़ सकता है। ऐसी स्थिति में इनकी उस मेरठ वाली रैली से शुरू किये गये मिशन का भविष्य क्या होगा ? पूरा आटा गीला होना संभावित है। वैसे भी एक के बाद एक पार्टी के दिग्गज नेताओं के पार्टी से किनारा कर लेने के परिणाम स्वरूप पार्टी को एक प्रकार से पलीता लग चुका है। नौ साल पहले बैच दी गयी इन शक्कर मिलों पर सर्वोच्चय न्यायालय ने रोक लगाकर सम्बन्धितों से जबाब तलब किया है। कोर्ट ने राज्य सरकार, सी. बी. आई और सी. ए.जी को भी नोटिस जारी कर सवाल पूछे हैं।

शेष पृष्ठ क्रमांक 4 पर

महिलाओं का सामर्थ्य बढ़ाने की आवश्यकता है-ऊषा ताई चाटी

राष्ट्रसेविका समिति की १९९४ से २००६ तक प्रमुख संचालिका रहीं ऊषा ताई चाटी का गत १७ अगस्त को नागपुर में निधन हो गया। सन् २००० में समिति के शिक्षा वर्ग में जयपुर आई थीं। उस समय उनका साक्षात्कार लिया था उन्हें श्रद्धांजलि के रूप में वह साक्षात्कार प्रकाशित किया जा रहा है।

– ताई जी, इस समय समिति के कार्य की क्या स्थिति है ? –इस समय पूरे देश में समिति की 6,500 शाखाएं चल रही हैं। अब शहरी क्षेत्रों के अलावा ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाएं भी प्रशिक्षण लेने को आने लगी है। इस प्रकार अपना काम चल रहा है और आगे भी बढ़ेगा, ऐसा लगता है।

– किस प्रान्त विशेष में समिति का काम अच्छा चल रहा है ?

– प्रान्त विशेष की दृष्टि से महाराष्ट्र में काम अच्छा है। कार्यकर्ता बहिनों की संख्या बढ़ रही है। उसके साथ–साथ कर्नाटक में भी काम बढ़ रहा है। कुछ क्षेत्रों जैसे – असम में काम करना कठिन है। विरोध अधिक है। वहां की प्रचारिकाओं को लगता है कि आत्मरक्षा तथा अस्मिता जागरण के लिए इस कार्य की बहुत आवश्यकता है। हाल ही में हमने बिहार में भी काम बढ़ाने में भी काम बढ़ाने का प्रयास किया है।

–पिछले करीब 64 वर्षो से समिति का कार्य चल रहा है। इस काम की शुरूआत . . . . . द्देश्य को लेकर हुई थी। समिति इस दद्देश्य को किस हद तक पूरा कर सकी है ?

–समिति का मुख्य उद्देश्य है महिलाओं को संगठित करना और दूसरा उद्देश्य है महिलाओं की सब प्रकार की मानसिक तथा शरीरिक शक्ति बढ़ाना सभी प्रान्तों में जहां अपनी कार्यकर्ता बहिनें काम करती हैं वे अत्यन्त आत्माविश्वास से काम कर रही हैं। कार्य को बढ़ाने के बारे में सोच रही हैं। संगठन की दृष्टि से देखें तो संगठित शक्ति भी थोड़ी बढ़ गई है। दूसरी बात यह है कि असम, जम्मू आदि में अकेले जाकर काम करने का मानस प्रचारिकाओं का बना है। **– समिति का उद्देश्य सामाजिक परिवर्तन का भी है। तो समिति के काम से समाज में कितना परिवर्तन आया है** –कुछप्रदेशों, जैसे–राजस्थान,उत्तर प्रदेश आदि में जब हम काम करने गये तो वहॉ की महिलाओं की काम करने की मानसिकता नही थी। समाज भी नही चाहता था कि वे घर की चौखट से बाहर जाकर काम करें। लेकिन अब हम देख रहे है कि इन प्रांतो में काम चलने से महिलाएं भी स्वयं आगे आकर काम कर रही हैं। इसके अतिरिक्त सेविका समिति में संस्कार प्राप्त कर अनेक बहिनों ने नारी शक्ति के जागरण हेतु अन्यान्य काम शुरू किये है। कुछ सेविकाओं ने अन्य प्रान्तों की कामकाजी महिलाओं के लिए छात्रावास चलाये हैं। जगत्याल (आध्रं प्रदेश), नागपुर (महाराष्ट्र), बिलासपुर (मध्यप्रदेश) आदि में ऐसे छात्रावास हैं। हम लोगों ने अपने कुछ भवनों में लघु उद्योग भी शुरू किए हैं। पूना में वृद्ध महिलाओं के लिए एक 'परिवार महिला निवास प्रकल्प शुरू किया है। जालंधर में रहने वाली लद्दाख से आई बहिनों के लिए भी ऐसा ही प्रकल्प शुरू किया है। उनकों वहॉ पढ़ाने की भी व्यवस्था है। शोलापुर में बच्चों को कई तरह के खेलों का प्रशिक्षण देने और उन्हें प्रतियोगिताओं में जाने लायक बनाने का काम शुरू किया गया है। कुछ सेविकाएं 'स्वदेशी भण्डार' चलाती हैं। अहमदाबाद में आयुर्वेद की दवाई बनाने तथा आयुर्वेद–चिकित्सा करने का एक सेंटर है। कांकरिया में भी एक ऐसा केन्द्र है। इस तरह महिलाओं को संस्कार दे उनमें परिवर्तन ताा संस्कारित सेविकाओं द्वारा समाज में परिवर्तन,यही समिति की कार्य योजना है। **– महिलाओं के लिए विधानसभाओं, लोकसभा आदि में जो 33 प्रतिशत आरक्षण देने की मांग चल रही है, उस संबंध में आपका क्या मत है ?** – समिति ने इस पर पहले ही विरोध दर्शाया है। हम यह मानते हैं। कि महिलाओं का सामर्थ्य बढ़ाना आवश्यक है। अतः उनके लिए 33 प्रतिशत मांगने की आवश्यकता नहीं है। महिलाओं को स्वयं में ही इतना समर्थ बनना चाहिए कि वो अपना हक स्वयं प्राप्त कर सकें। **– ताई जी, दूरदर्शन वगैरह में जो नारी छवि प्रदर्शित की जा रही है, उसके बारे में आपका क्या दृष्टिकोण है ?** इसके बारे में हम लोग शुरू से ही इसका विरोध कर रहे हैं। दूरदर्शन पर नारी की गलत छवि नहीं जानी चाहिए। इसके बारे में कई हजार हस्ताक्षर लेकर शासन को ज्ञापन भेजा था पर उसका असर नही हुआ। फिर भी यदि सब महिलाएं मिलकर विरोध करें तो उसका असर होगा, ऐसा हमारा सोचना है।

– राजस्थान की महिलाओं के लिए आशीर्वाद के रूप में आपका संदेश ?

– राजस्थान की महिलाएं खुद भी आगे बढ़ सकती हैं। उनमें कर्मशक्ति भी है और तेजिस्वता भी। किन्तु उन्हें थोड़ा और मार्गदर्शन मिले तो वे और तेजी से आगे बढ़ सकती हैं। यहां की महिलाओं में जो गुण हैं यदि उनमें वे निपुण हो जाएंगी तो वे हर क्षेत्र में आगे बढ़ सकती हैं यदि उनमें वे निपुण हो जाएंगी तो वे हर क्षेत्र में आगे बढ़ सकती है। उनकी मानसिकता ऐसी हो कि हम भी किसी से कुछ कम नहीं।

तुष्टीकरण का चमत्कार

दिल्ली के प्रोफेसर को बंगाल सरकार ने आरोपी बनाया

बंगाल की सेकुलरवादी सरकार ने तुष्टीकरण की सारी सीमांए पार करते हुए दिल्ली विश्व वि. के प्रोफेसर राकेश सिन्हा पर एक मुकदमा ठोक दिया। बशीरहाट की जिहादी हिंसा की आलोचना से घबराई राज्य सरकार ने प्रो. राकेश सिन्हा के अतिरक्ति मैसूर और हैदराबाद के भाजपा सांसदों तथा दिल्ली भाजपा की प्रवक्ता नुपुर शर्मा पर साम्प्रदायिकता भड़काने का आरोप लगा कर कोलकाता में प्राथमिकी दर्ज करा दी। प्राथमिकी किसी मनोज कुमार सिंह ने दर्ज कराई है और उसमें कहा गया है कि उक्त सभी आरोपियों ने फैसबुक पर साम्प्रदायिकता भड़काने वाले संदेश डाले। डॉ. राकेश सिन्हा ने इन आरोपों को आधार हीन तथा हास्यास्पद बताया है और कहा कि वर्तमान बंगाल सरकार मार्क्सवादियों से भी अधिक दमन का सहारा ले रही है। जब बंगाल से बाहर की यह स्थिति है तो बंगाल में रह कर तृणमूल कांग्रेस का विरोध करने वालों का क्या हाल होगा, अनुमान लगाया जा सकता है।

अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठी के विद्वानों ने कहा

महाभारत कोरी कल्पना नहीं बल्कि इतिहास है

महाभारत और रामायण भारत के लोगों के मन में बसे हुए हैं। महाभारत को तो पॉचवा वेद कहा जाता है और 'राम' नाम प्रातः जागरण से रात्रि विश्राम तथा जन्म से मृत्यु तक व्यक्ति के साथ रहता है। सेकुलरवादी विचारक उक्त दोनों ग्रन्थों को काल्पनिक बताते है और इन्हें मात्र साहित्यिक कृति मानते हैं। वास्तव मे दोनों ही भारत के इतिहास का दिग्दर्शन कराने वाले महाग्रन्थ हैं। पिछले दिनों यही प्रमाणित करने के लिये दिल्ली के इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में एक अन्तराष्ट्रीय गोष्ठी हुई। द्रोपद्री ड्रीम ट्रस्ट की इस गोष्ठी में देश विदेश के अनेक विद्वान सम्मिलित हुए। तीनों के इस विचार विनिमय को महाभारत मन्थन नाम दिया गया था। जाने माने पुरात्ववेत्ता प्रो.बी.बी. लाल. बी.आर.मणि, इतिहासकार डॉ.एस के हरि, डॉ. हेमा हरि, डॉ. मोहन गुप्ता, डॉ.नलिनी राव, डॉ.बी.के.वी. शास्त्री बेल्जियम के विद्वान डॉ. कोनरेड एल्स्ट फ्रांस के प्रो. एलेक्स पेंचर्ड सहित सभी विद्वानों ने महाभारत की ऐतिहासिकता सिद्ध की। महाभारत मन्थन के आयोजकों ने 'द्वापर युग की यात्रा' नाम की एक प्रदर्शनी भी लगाई। इसमें महाभारत का इतिहास बताने वाले नक्शे एवं अन्य ऐतिहासिक दस्तावेज प्रदर्शित किये गये थे। महाभारत, काल के वृहत्तर भारत के विभिन्न राज्यों गांधार, पांचाल, हस्तिनापुर, इन्द्रप्रस्थ, प्राग्ज्योतिषपुर आदि को प्रदर्शित करने वाला मानचित्र विशेष आकर्षण का केन्द्र बना। द्रोपदी ड्रीम ट्रस्ट कई वर्षो से महाभारत में वर्णित स्थानों को खोजने और उन्हें चिन्हित करने में जुटा हुआ है।

धारा ३७० एवं राष्ट्रीय एकता' पर हुई गोष्ठी

गत 20 अगस्त को उदयपुर के विश्व संवाद केन्द्र तथा प्रज्ञा–प्रवाह के संयुक्त तत्वधान में एक गोष्ठी का आयोजन किया गया। विश्व संवाद केन्द्र के सभागार में आयोजित इस गोष्ठी का विषय 'अनुच्छेद 370 एवं राष्ट्रीय एकता' था। उक्त विषय पर मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुये विद्या भारती के प्रांतीय मंत्री श्री सुरेन्द्र सिंह राव ने कहा कि धारा 370 भारत की एकता और अखण्डता के लिये खतरा बनी हुई है। कार्यक्रम में विशिष्ठ अतिथि श्री रमेश शुक्ल थे। उन्होंने डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के बलिदान को व्यर्थ न जाने देने का आह्वान किया और धारा 670 के उन्मूलन की आवश्यकता बताई

जयपुर में ५१ संस्कृत संभाषण शिविर आयोजित हुए

संस्कृत भाषा को आमजन की भाषा में लोकप्रिय बनाने के उद्देश्य से 'संस्कृत भारती' समय–समय पर संस्कृत संभाषण शिविरों का गत 4 अगस्त को जयपुर के विभिन्न शिक्षण संस्थानों में शुभारम्भ हुआ। कुल 51 संस्कृत संभाषण शिविर नगर में लगाये गये। इनमें 1500 शिविरार्थियों ने सरल पद्धाति से संस्कृत बोलने का प्रशिक्षण प्राप्त किया। इसके साथ ही छात्रों में संस्कृत की रोचकता और लोकप्रियता बढ़े इसके लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया। सभी शिविरों का समापन गत 11 अगस्त को मानसरोवर स्थित राधे रानी पार्क में हुआ। इस अवसर पर संस्कृत भारती के अखिल भारतीय संपर्क प्रमुख श्री नंद कुमार उपस्थित थे। समापन कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्कृत भारतीय, जयपुर प्रांत के अध्यक्ष श्री हरिशंकर भारद्वाज ने की। समारोह में प्रतियोगिताओं में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले शिक्षर्थियों को पुरस्कृत भी किया गया।

ओसियां में स्वदेशी चेतना रैली का आयोजन

गत 21 अगस्त को ओसियां कस्बे में 'स्वदेशी चेतना रैली' का आयोजन किया गया। रैली का आयोजन स्वदेशी सुरक्षा अभियान के अंतर्गत 'स्वदेशी जागरण मंच' की जोधपुर इकाई की ओर से किया गया था। जोधपुर प्रांत प्रचारक श्री चन्द्राशेखर ने रैली को सम्बोधित करते किया और कहा कि चीन अन्तर्राष्ट्रीय मानवता के लिए खतरा बनता जा रहा है। इसलिए चीन के सामान का बहिष्कार अनिवार्य रूप से करना होगा इस चेतना रैली में श्री गोपाल परिहार, उपखण्ड अधिकारी, ओसियां तथा स्थानीय विधायक श्री भैराराम सियोल भी मौजूद थे। बाद में 6 हजार से अधिक छात्र–छात्राओं को स्वदेशी अपनाने का संकल्प भी दिलवाया।

स्वतंत्रता में स्वदेशी चेतना रैली का आयोजन

गत 15 अगस्त को उदयपुर के स्वयंसेवकों ने स्थानीय फतहसागर की पाल पर घोष वादन प्रस्तुत किया। स्वतंत्रन्त्रता दिवस के पावन अवसर पर आयोजित इस कार्यक्रम में संघ के क्षेत्रीय प्रचारक श्री दुर्गादास भी उपस्थित थे। अध्यक्षता वीर चक्र विजेता श्री दुर्गाशंकर पालीवाल ने की।

जोधपुर में स्वदेशी जागरण मंच की गोष्ठी

गत 14 अगस्त को स्वदेशी जागरण मंच की जोधपुर इकाई की ओर से एक गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम स्थानीय 'इस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियर्स' के सभागार में रखा गया था। गोष्ठी का विषय 'चीन का विकास मॉडल का भारतीय दृष्टिकोण से आंकलन' था। इस विषय पर मुख्य वक्ता श्री भगवती प्रकाश शर्मा, स्वदेशी जागरण मंच सहसंयोजक तथा पेसेफिक विश्वविद्यालय के कुलपति थे। उन्होंने भारत सरकार एवं आम जनता से चीन का सामान न खरीदने का आग्रह किया। उन्होंने यह भी कहा कि विश्व में भारत की छवि को बेहतर रखने एवं आर्थिक हितों को संवारने हेतु लघु उद्योगों एवं कुटीर उद्योगों को बढ़ाना देने की आवश्यकता है। जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आर.पी. सिंह ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये चीन से भारत की अर्थव्यवस्था, सामरिक क्षेत्र में हो रहे खतरों से भी अवगत कराया।

चीनी सरकार ने नोवेल विजेता की पत्नी को भेजा जेल

भारत के वामर्गियों के लिये चीन मातृभू–पितृभू है। पहले यह सम्मान रूस को मिला हुआ था। रूस में जब बरसात होती थी तो कामरेड भारत में छतरी निकाल कर तान लेते थे। उनके घरों, कार्यालयों में मार्क्स, माओं, लेनिन, स्तालिन के ही चित्र और मूर्तियॉ मिलेंगे। मार्क्सवादी पार्टी ने तो 1962 के चीन आक्रमण के समय चीनी सेना को मुक्तिवाहिनी बता कर बकायदा उसका स्वागत किया था। इसी मुद्दे पर साम्यवादी दल के दो टुकड़े हुये– चीन समर्थक मार्क्सवादी पार्टी (सीपीएम) तथा रूस समर्थक भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीआई)। कामरड़ों की प्रेरणा स्थली चीन में विचारों की आजादी का ऐसा दमन होता है कि नोबुल पुरूस्कार विजेता **लिउ जियाबो** को पूरे जीवन जेल में रहना पड़ा। जुलाई के आरंभ में जेल में ही शान्ति के लिये नोबेल पुरूस्कार प्राप्त करने वाले लिउ जियाबो का निधन हो गया। अब उनकी विधवा पत्नि भी गायब है। 56 वर्ष की लिउ जिया एक अच्छी कवियित्री हैं। 16 जुलाई को उनके पति का अंतिम संस्कार किया गया था। उसी दिन चीनी सरकार ने उनको किसी अज्ञात स्थान पर बंद कर दिया। उनके वकील ने चीनी सरकार से लिउ जिया को रिहा करने की प्रार्थना की हैं। संवाद एजेंसी ए एफ पी के अनुसार वकील जेयर्ड गेंसर ने संयुक्त राष्ट्र संघ से भी लिउ जिया को बचाने का अनुरोध किया है। इससे पता चलता है कि कामरेड बिरादरी कितनी असहिष्णु है।

अफ्रीका से यूरोप तक जिहादियों का आतंक

अफ्रिका से यूरोप तक पूरी दुनिया में जिहादी शान्तिप्रिय और निर्दोष लोगों को हिंसा का शिकार बना रहे हैं। उदारवादी विचारधाराओं का अनुचित लाभ उठाते हुये इस्लाम के नाम पर आतंकी गिरोह तमाम देशों की सुरक्षा व्यवस्था में सेंध लगा रहे है। पिछले कुछ दिनों में जिहादियों ने स्पेन, जर्मनी, बर्किना फासों, अफगानिस्तान आादि में आतंकी कारवाई करवाइयॉ की। गत 17 अगस्त को स्पेन के प्रमुख नगर बार्सीलोना में जिहादियों ने एक वेन भीड़ पर चढ़ा दी। नगर के प्रमुख चौक 'लास राब्लास' में उस समय काफी लोग खरीददारी कर रहे थे। इस क्रूर कत्य में 13 लोगों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा। स्थानीय पुलिस के अनुसार जिहादी कोई भीषण वारदात करना चाहते थे। उक्त वारदात के बाद सुरक्षा बलों ने आतंकियों के ठिकानों पर छापे मारे तो भारी मात्रा में विस्फोटक पुलिस को मिले। इस घटना के तीन दिन पहले 14 अगस्त को **बार्किना फासो** के एक रेस्तरों पर आतंकियों ने हमला कर 18 लोगों को गोलियों से भून दिया। बर्किना फासो अफ्रीका के पश्चिम में दो करोड़ की जनसंख्या वाला मुस्लिम देश है। माली, घाना तथा आइवरी कोस्ट के बीच में यह बसा है। 14 अगस्त की रात राजधानी **ओगाडूगू** के एक रेस्तरां में दो बन्दूकधारी घुसे और गोलियां बरसाना शुरू कर दिया। बाद में दोनों आतंकी मार दिये गये। इसी प्रकार जुलाई के अंत के दिनों में हेम्बर्ग(जर्मनी) के एक सुपर बाजार में चाकूबाज आतंकी ने कई लोगों को घायल कर दिया। घायलों में से एक ने कुछ समय पहले ही दम तोड़ दिया। शुक्रवार 25 अगस्त को अफगानिस्तान की राजधानी में आतंकियों ने एक शिया मस्जिद पर हमला कर 13 लोगों को मार दिया ।

पाक अधिकृत कश्मीर में आजादी का आन्दोलन

हमारे कश्मीर के अलगाववादी कश्मीर घाटी में पाक झण्ड़े लहराते है, पाकिस्तान का राष्ट्रीय गीत गाते है और कश्मीर को पाकिस्तान के हवाले कर देने की आवाज उठाते है। उधर पाकिस्तान के अवैध अधिकार वाले कश्मीर में लोग पाकिस्तान से दुःखी है। वहॉ आये दिन पाकिस्तान के विरोध में प्रदर्शन होते रहते है और जिहादियों से आजादी की मॉग जोरदार तरीके से उठ रही है। अंग्रेजी दैनिक डीएन(20 अग.) के अनुपात गत 19 अगस्त को 'जम्मू–कश्मीर (पाक अधिकृत) नेशनल स्टूडेण्ट फेडरेशन' ने जन्दाली में पाकिस्तान सरकार के खिलाफ विशाल प्रदर्शन किया। प्रदर्शन में भाग ले रहे स्थानीय नेता लियाकत खान ने पत्रकारों को बताया कि आतंकियों ने पाक अधिकृत में लोगों का जीना मुश्किल कर रखा है। एक अन्य नेता तैफूर अकबर ने कहा कि कश्मीरियों से गुलामो जैसा व्यवहार किया जा रहा है। पाकिस्तान सेना भी वहॉ रहने वालों पर अत्याचार करती है।

पृष्ठ क्रं. 1 का शेष भाग

इसके कारण अनेक अधिकारियों, सत्ता से जुड़े राजनेताओं की नींद में दखल पड़ना शूरू हो गया है। आम चुनाव के आते–आते बसपा सुप्रीमों और उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री रह चुकी मायावती पर गाज गिरने की संभावना बढ़ती जा रही है। याचिका कर्ताओं का आरोप है कि ये शक्कर मिलें अपने चहेतों को कौड़ियों के भाव बेची गयी थी। जिससे सरकारी खजाने को करोड़ों– अरबों का नुकसान पहुँचा है। आरोप गंभीर श्रेणी के हैं। मुख्यमंत्री बनते ही इस मामले की जानकारी योगी आदित्यनाथ जी को दे दी गयी थी। उन्होने गत आठ अप्रैल को ही इस मामले की जॉच करने की घोषणा कर दी। यह मामला अभी विधानसभा की सार्वजनिक उद्यम समिति के पास लम्बित है। यदि समिति सी. ए. जी. की रिपोर्ट में उल्लिखित आपत्तियों को स्वीकार कर लेती है तो इसकी जॉच तत्कालीन मुख्यमंत्री तथा सम्बंधित अधिकारियों पर भारी पड़ सकती है। खुद दलितों का उद्धार करने वाली, उनका तारणहार कही जाने वाली मायावती के पास सन् 2012 में उनकी संपत्ती बढ़कर एक सौ ग्यारह करोड़ से ऊपर हो चुकी थी। उनके भाई बसपा के उपाध्यक्ष आनन्द कुमार के पास भी 1316 करोड़ रूपये की संपत्ति है। इसी दौरान मायावती उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री रही।

सूचना

कृपया आप ~~अपना~~ ई–मेल एवं मोबाइल नम्बर महाकौशल संदेश के ई मेल में भेजने का कष्ट करें ताकि 'महाकोशल संदेश' आपको ईमेल पर प्रेषित किया जा सके । –

प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. किशन कछवाहा द्वारा विश्व संवाद केन्द्र, महाकोशल, प्लाट नं–1, म.नं. 1692, नवआदर्श कालोनी, के लिये ओम आफसेट प्रिन्टर्स 239, यूनियन बैंक के सामने बल्देवबाग चौक, जबलपुर द्वारा मुद्रित। प्रकाशन स्थान–विश्व संवाद केन्द्र प्लाट नं 1, म.नं. 1692 नवआदर्श कॉलोनी गढ़ा मार्ग जबलपुर मध्यप्रदेश । संपादक– डॉ. किशन कछवाहा
Email:- vskjbp@gmail.com kishan_kachhwaha@rediffmail.com